Q.53. समानान्तरवाद (Parallelism) क्या है? क्या यह मन शरीर के संबंध की संतोषप्रद व्याख्या प्रस्तुत करता है?

Ans. मन-शरीर के बीच संबंध की समस्या का समाधान करने वाले वादों या मतों में से एक वाद है समानान्तरवाद। इस वाद के प्रचारक स्पिनोजा है। यद्यपि स्पिनोजा द्वैतवादी नहीं हैं किन्तु मन और शरीर, चित् और अचित् का गौण द्वैत उनके दर्शन में भी उपस्थित है। 'गौण द्वैत' कहने का तात्पर्य यह है कि स्पिनोजा चित् एवं अचित् को परस्पर स्वतंत्र 'द्रव्य' नहीं मानते। द्रव्य तो एक ही हैं–ईश्वर जो निरपेक्ष, स्वतंत्र, अपरिमित, अद्वितीय, स्वत: सिद्ध, स्वयम्भू, पूर्ण नित्य, अन्तर्यामी और निर्गुण तथा अनिर्वचनीय है। किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से ईश्वर को अनन्तगुण सम्पन्न मानना आवश्यक है। जब तक ईश्वर का साक्षात्कार नहीं होता, तब तक उसके सगुणत्य का प्रतिपादन अनिवार्य है। ईश्वर के अनन्त गुणों में से मानवीय बुद्धि केवल दो गुणों को जानती है जो कि मानव में भी उपस्थित हैं–चैतन्य और विस्तार। चित् का अर्थ है चैतन्य एवं अचित् का अर्थ है विस्तार। ये ईश्वर के गुण, धर्म या विशेषण मात्र हैं। एक ही परमसत्ता के गुण होने से ये परस्पर विरुद्ध नहीं हैं। किन्तु वे परस्पर भिन्न अवश्य हैं। इस प्रकार उनमें जो द्वैत है, वह 'गौण द्वैत' है।

अतएव, स्पिनोजा के अनुसार, चित् एवं अचित् या मन और शरीर के बीच पारस्परिक संयोग या क्रिया-प्रतिक्रिया मानने की आवश्यकता नहीं है। उनमें कार्य-कारण संबंध नहीं है, पारस्परिक संगति मात्र है। प्रत्येक घटना दैहिक और आध्यात्मिक दोनों है। जड़ की दृष्टि से दैहिक एवं चेतन की दृष्टि से आध्यात्मिक। दोनों में संगति है। चित् और अचित् एक ही स्रोत (ईश्वर) से निकलने वाली दो समानान्तर धाराओं के रूप में प्रवाहित हो रहे हैं। मन और शरीर का सम्बन्ध अविभाज्य है। यही स्पिनोजा का चिदचित् समानान्तरवाद है।

समीक्षा : 1. द्वैत, चाहे वह गौण स्तर पर ही क्यों न हो, एक समस्या है जिसका समाधान करने में कोई भी द्वैतवादी दर्शन पूर्ण रूप से सफल नहीं हुआ है। स्पिनोजा भी इस समस्या का कोई संतोषजनक समाधान प्रस्तुत नहीं कर पाये हैं।

2. समानान्तरवाद के अनुसार शारीरिक घटना का कारण अन्य शारीरिक घटनायें हैं एवं मानसिक घटना का कारण अन्य मानसिक घटनाएँ हैं। शारीरिक घटनाओं का परिचालन यान्त्रिक नियमों से होता है। संकल्प से कोई भी शारीरिक घटना घटित नहीं होती। मानव भ्रमवश शारीरिक घटनाओं को संकल्प से प्रभावित मानता है। संकल्प का कारण अन्य संकल्प है। स्पिनोजा का यह सिद्धांत अनुभव सिद्ध नहीं है। संकल्प से शारीरिक घटनाओं का निर्धारण अनुभव से जाना जा सकता है।

3. मन और शरीर के बीच जो संबंध का अनुभव हमें होता है, उसकी व्याख्या स्पिनोजा के अनुसार इस प्रकार है–जो मन में घटता है वही शरीर में घटता है। जो शरीर में घटता है, वही मन में घटता है। इस प्रकार एक ही घटना मन और शरीर में साथ-साथ घटती है। इससे डेकार्ट जैसे विचारकों को भ्रम उत्पन्न होता है कि मन का प्रभाव शरीर पर पड़ता है और शरीर का मन पर। स्पिनोजा के इस सिद्धांत पर आपत्ति की जा सकती है कि समानान्तर घटनाओं का प्रमाण क्या है? जिस प्रकार 'पिनियल ग्लैण्ड' में चित् अचित् के सम्मिलन को डेकार्ट की कल्पना मात्र माना जा सकता है, उसी प्रकार स्पिनोजा के समानान्तरवाद को उनकी अभिनव कल्पना क्यों न मानें?

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com